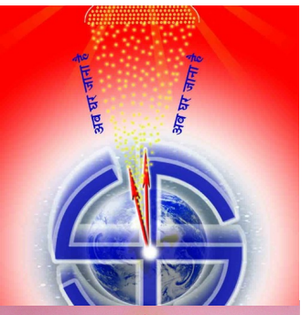

29-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - अब घर जाना है इसलिए देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूल मामेकम् याद करो और पावन बनो"

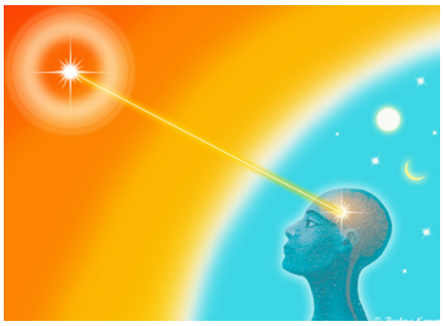

प्रश्नः- आत्मा के संबंध में कौन सी एक महीन बात महीन बुद्धि वाले ही समझ सकते हैं?

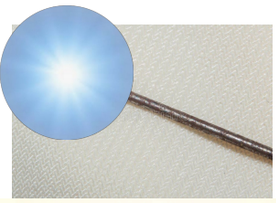

उत्तर:- आत्मा पर सुई की तरह धीरे-धीरे जंक (कट) चढ़ती गई है। वह याद में रहने से उतरती जायेगी। जब जंक उतरे अर्थात् आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनें तब बाप की खींच हो और वह बाप के साथ वापस जा सके। 2- जितना जंक उतरती जायेगी उतना दूसरों को समझाने में खीचेंगे। यह बातें बड़ी महीन हैं, जो मोटी बुद्धि वाले समझ नहीं सकते।

ओम् शान्ति। भगवानुवाच। अब बुद्धि में कौन

29-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति धुबन

आया? वह जो गीता पाठशालायें आदि हैं उन्हों को तो भगवानुवाच कहने से श्रीकृष्ण ही बुद्धि में आयेगा। यहाँ तुम बच्चों को तो ऊंच ते ऊंच बाप याद आयेगा। इस समय यह है संगमयुग, पुरुषोत्तम बनने का। बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं कि देह सहित देह के सब सम्बन्ध तोड़ अपने को आत्मा समझो। यह बहुत जरूरी बात है, जो इस संगमयुग पर बाप समझाते हैं। आत्मा ही पतित बनी है। फिर आत्मा को पावन बन घर जाना है। पतित-पावन को याद करते आये हैं, परन्तु जानते कुछ नहीं। भारतवासी बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में हैं। भक्ति है रात, ज्ञान है दिन। रात में अन्धियारा, दिन में रोशनी होती है। दिन है सतयुग, रात है कलियुग। अभी तुम कलियुग में हो, सतयुग में जाना है। पावन दुनिया में पतित का क्वेश्चन ही नहीं। जब पतित होते हैं तो पावन होने का क्वेश्चन उठता है। जब पावन हैं तो पतित दुनिया याद भी नहीं। अभी पतित दुनिया है तो पावन दुनिया याद पड़ती है। पतित दुनिया पिछाड़ी का भाग है, पावन दुनिया है पहला भाग। वहाँ

m.m.m....imp.

imp to understand

Part - 1

Inter val

Part - 2

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

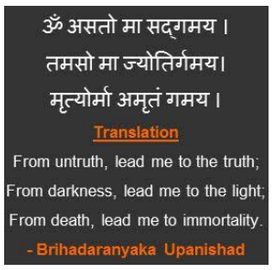

shivbaba की महिमा

बाप का जो गायन है कि वह सर्जन भी है, इंजीनियर भी है, वकील भी है, जज भी है - इसका प्रैक्टिकल सब अनुभव करेंगे, तब सब तरफ से बुद्धि हटकर एक तरफ जायेगी।
AV: 2/11/87

कोई पतित हो न सके। जो पावन थे फिर पतित बने हैं। 84 जन्म भी उन्हों के समझाये जाते हैं। यह बड़ी गुह्य बातें समझने की हैं। आधाकल्प भक्ति की है, वह इतना जल्दी छूट न सके। मनुष्य बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में हैं, कोटों में कोई ही निकलते हैं, मुश्किल कोई की बुद्धि में बैठेगा। मुख्य बात तो बाप कहते हैं देह के सब सम्बन्ध भूल मामेकम् याद करो। आत्मा ही पतित बनी है, उनको पवित्र बनना है। यह समझानी भी बाप ही देते हैं क्योंकि यह बाप प्रिंसिपल, सोनार, डॉक्टर, बैरिस्टर सब कुछ है। यह नाम वहाँ रहेंगे नहीं। वहाँ यह पढ़ाई भी नहीं रहेगी। यहाँ पढ़ते हैं नौकरी करने के लिए। आगे फीमेल इतना पढ़ती नहीं थी। यह सब बाद में सीखी हैं। पति मर जाए तो सम्भाल कौन करे? इसलिए फीमेल भी सब सीखती रहती हैं। सतयुग में तो ऐसी बातें होती नहीं जो चिंतन करना पड़े। यहाँ मनुष्य धन आदि इकट्ठा करते हैं, ऐसे समय के लिए। वहाँ तो ऐसे ख्यालात ही नहीं जो चिंता करनी पड़े। बाप तुम बच्चों को कितना धनवान बना देते हैं। स्वर्ग में

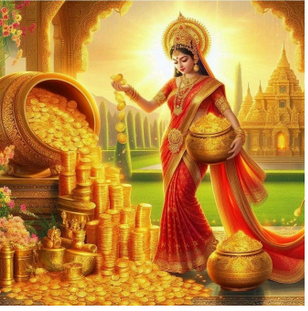

29-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

We can see this →

बहुत खज़ाना रहता है। हीरे-जवाहरातों की खानियाँ सब भरपूर हो जाती हैं। यहाँ बंजर जमीन हो जाती है तो वह ताकत नहीं होती। वहाँ के फूलों और यहाँ के फूलों आदि में रात-दिन का फर्क है। यहाँ तो सब चीज़ों से ताकत ही निकल गई है। भल कितना भी अमेरिका आदि से बीज ले आते हैं परन्तु ताकत निकलती जाती है। धरनी ही ऐसी है, जिसमें जास्ती मेहनत करनी पड़ती है। वहाँ तो हर चीज़ सतोप्रधान होती है। प्रकृति भी सतोप्रधान तो सब कुछ सतोप्रधान होता है। यहाँ तो सब चीजें तमोप्रधान हैं। कोई चीज़ में ताकत नहीं रही है।

कलियुग | सतयुग comparison

How Great we are...!

यह फर्क भी तुम समझते हो। जब सतोप्रधान चीज़ें देखते हो, वह तो ध्यान में ही देखते हो। वहाँ के फूल आदि कितने अच्छे होते हैं। हो सकता है - वहाँ का अनाज आदि सब तुमको देखने में आये। बुद्धि से समझ सकते हैं। वहाँ की हर चीज़ में कितनी ताकत रहती है। नई दुनिया किसकी बुद्धि में आती ही नहीं। इस पुरानी दुनिया की तो बात मत पूछो। गपोड़ा भी बहुत लम्बा-चौड़ा लगाते हैं तो मनुष्य बिल्कुल अन्धियारे में सो गये हैं। तुम

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

बताते हो बाकी थोड़ा समय है तो तुम्हारे पर कोई हंसी भी करते हैं। रीयल्टी में तो वह समझते हैं जो अपने को ब्राह्मण समझते हैं। यह नई भाषा, रूहानी पढ़ाई है ना। जब तक स्प्रीचुअल फादर न आये, कोई समझ न सके। स्प्रीचुअल फादर को तुम बच्चे जानते हो। वो लोग जाकर योग आदि सिखाते हैं, परन्तु उन्हों को सिखलाया किसने? ऐसे तो नहीं कहेंगे स्प्रीचुअल फादर ने सिखाया। बाप तो सिखलाते ही रूहानी बच्चों को हैं। तुम संगमयुगी ब्राह्मण ही समझते हो। ब्राह्मण बनेंगे भी वह जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के होंगे। ब्राह्मण तुम कितने थोड़े हो। दुनिया में तो किस्म-किस्म की अथाह जातियाँ हैं। एक किताब जरूर होगा जिससे पता लगेगा कि दुनिया में कितने धर्म, कितनी भाषायें हैं। तुम जानते हो यह सब नहीं रहेंगे। सतयुग में तो एक धर्म, एक भाषा ही थी। सृष्टि चक्र को तुमने जाना है। तो भाषाओं को भी जान सकते हो कि यह सब रहेंगे नहीं। इतने सब शान्तिधाम चले जायेंगे। यह सृष्टि का ज्ञान अभी तुम बच्चों को मिला है। तुम मनुष्यों को समझाते

How Great we are...!

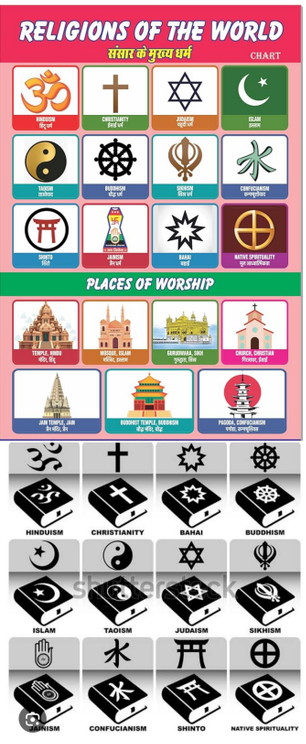

How Lucky we are...!

हो फिर भी समझते थोड़ेही हैं। कोई बड़े आदमियों से ओपनिंग भी इसलिए कराते हैं क्योंकि नामीग्रामी हैं। आवाज़ फैलेगा वाह! प्रेजीडेंट, प्राइम मिनिस्टर ने ओपनिंग की। यह बाबा जाये तो मनुष्य थोड़ेही समझेंगे परमपिता परमात्मा ने ओपनिंग की, मानेंगे नहीं। कोई बड़ा आदमी कमिश्नर आदि आयेगा तो उनके पीछे और भी भागेंगे। इनके पीछे तो कोई नहीं भागेगा। अभी तुम ब्राह्मण बच्चे तो बहुत थोड़े हो। जब मैजारिटी होंगे तब समझेंगे। अभी अगर समझ जायें तो बाप के पास भागें। एक ने बच्ची को कहा था कि जिसने तुमको यह सिखाया हम डायरेक्ट क्यों न उनके पास जायें। परन्तु सुई पर कट लगी हुई है तो चुम्बक की कशिश कैसे हो? कट जब पूरी निकले तब चुम्बक को पकड़ सके। सुई का एक कोना भी कट चढ़ी हुई होगी तो उतना खीचेंगी नहीं। सारी कट उतर जाये वह तो पिछाड़ी में जब ऐसे बनेंगे फिर तो बाप के साथ वापिस जायेंगे। अभी तो फुरना (फिक्र) है कि हम तमोप्रधान हैं, कट चढ़ी हुई है। जितना याद करेंगे उतना कट

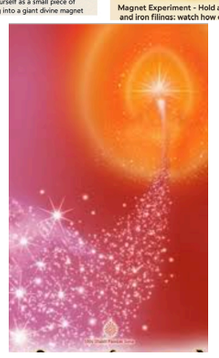

साफ होती जायेगी। आहिस्ते-आहिस्ते कट निकलती जायेगी। कट चढ़ी भी आहिस्ते-आहिस्ते है ना, फिर उतरेगी भी ऐसे। जैसे कट चढ़ी है वैसे साफ होनी है तो उसके लिए बाप को याद भी करना है। याद से कोई की जास्ती कट उतरी है, कोई की कम। जितना जास्ती कट उतरी हुई होगी

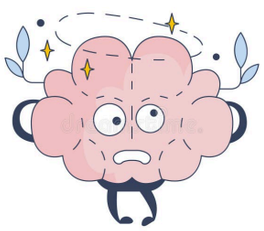

उतना वह दूसरे को समझाने में खीचेंगे। यह बड़ी महीन बातें हैं। मोटी बुद्धि वाले समझ न सकें। तुम जानते हो राजाई स्थापन हो रही है। समझाने के लिए भी दिन-प्रतिदिन युक्तियाँ निकलती रहती हैं।

आगे थोड़ेही पता था कि प्रदर्शनियाँ, म्यूज़ियम आदि बनायेंगे। आगे चल हो सकता है और कुछ निकले। अभी टाइम तो पड़ा है, स्थापना होनी है।

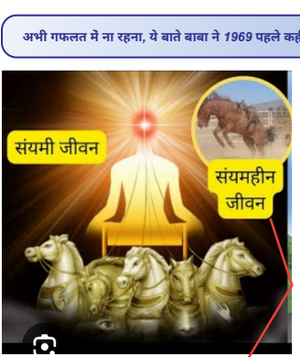

हार्टफेल भी नहीं होना है। कर्मेन्द्रियों को वश नहीं कर सकते हैं तो गिर पड़ते हैं। विकार में गये तो फिर सुई पर बहुत कट लग जायेगी। विकार से जास्ती कट चढ़ती जाती है। सतयुग-त्रेता में बिल्कुल थोड़ी फिर आधाकल्प में जल्दी-जल्दी कट चढ़ती है। नीचे गिर पड़ते हैं इसलिए निर्विकारी और विकारी गाया जाता है। वाइसलेस

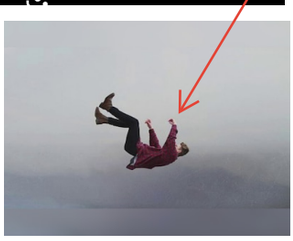

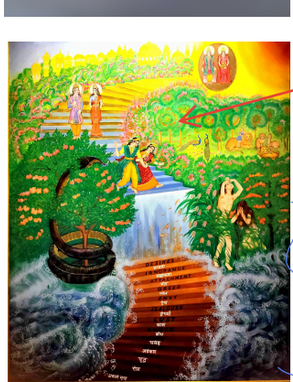

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

देवताओं की निशानी है ना। बाप कहते हैं देवी-देवता धर्म प्राय: लोप हो गया है। निशानियाँ तो हैं ना। सबसे अच्छी निशानी यह चित्र हैं। तुम यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र उठाए परिक्रमा दे सकते हो क्योंकि तुम यह बनते हो ना। रावण राज्य का विनाश, राम राज्य की स्थापना होती है। यह राम राज्य, यह रावण राज्य, यह है संगम। ढेर की ढेर प्वाइंट्स हैं। डॉक्टर लोगों की बुद्धि में कितनी दवाइयाँ याद रहती हैं। बैरिस्टर की बुद्धि में भी अनेक प्रकार की प्वाइंट्स हैं। ढेर टॉपिक्स का तो बहुत अच्छा किताब बन सकता है। फिर जब भाषण पर जाओ तो प्वाइंट्स नज़र से निकालो। शुरूड बुद्धि वाले झट देख लेंगे। पहले तो लिखना चाहिए हम ऐसे-ऐसे समझायेंगे। भाषण करने के बाद भी याद आता है ना। ऐसे समझाते थे तो अच्छा था। Double Benefit यह प्वाइंट्स औरों को समझाने से बुद्धि में बैठेगी। टॉपिक्स की लिस्ट बनी हुई हो। फिर एक टॉपिक उठाए अन्दर में भाषण करना चाहिए या लिखना चाहिए। फिर देखना चाहिए सब प्वाइंट्स लिखी हैं? जितना माथा मारेंगे उतना

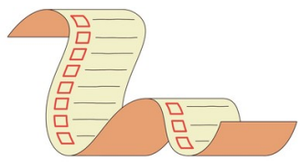

29-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अच्छा है। बाप तो समझते हैं ना यह अच्छा सर्जन है, इनकी बुद्धि में बहुत प्वाइंट्स हैं। भरपूर हो जायेंगे तो सर्विस बिगर मज़ा नहीं आयेगा।

तुम प्रदर्शनी करते हो कहाँ से 2-4, कहाँ से 6-8 निकलते हैं। कहाँ तो एक भी नहीं निकलता है। हज़ारों ने देखा, निकले कितने थोड़े इसलिए अभी बड़े-बड़े चित्र भी बनाते रहते हैं। तुम होशियार होते जाते हो। बड़े-बड़े आदमियों का क्या हाल है, वह भी तुम देखते हो। बाबा ने समझाया हैं जाँच करनी है किसको यह नॉलेज देनी चाहिए। रग देखनी चाहिए जो मेरे भक्त हों। गीता वालों को मुख्य बात एक ही समझाओ - भगवान ऊंच ते ऊंच को ही कहा जाता है। वह है निराकार। कोई भी देहधारी मनुष्यों को भगवान नहीं कह सकते। तुम बच्चों को अभी सारी समझ आई है। संन्यासी भी घर का संन्यास कर भागते हैं। कोई ब्रह्मचारी ही चले जाते हैं। फिर दूसरे जन्म में भी ऐसे होता है। जन्म तो

How lucky and Great we are...!

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

जरूर माता के गर्भ से ही लेते हैं। जब तक शादी नहीं की है तो बंधनमुक्त हैं, इतने कोई सम्बन्धी आदि याद नहीं आयेंगे। शादी की तो फिर सम्बन्ध याद आयेंगे। टाइम लगता है, जल्दी बन्धन-मुक्त नहीं होते। अपनी जीवन कहानी का मालूम तो सबको रहता है। संन्यासी समझते होंगे पहले हम गृहस्थी थे फिर संन्यास किया। तुम्हारा है बड़ा संन्यास इसलिए मेहनत होती है। वह संन्यासी भभूत लगाते, बाल उतारते, वेष बदलते। तुम्हें तो ऐसा करने की दरकार नहीं। यहाँ तो ड्रेस बदलने की भी बात नहीं। तुम सफेद साड़ी नहीं पहनो तो भी हर्जा नहीं। यह तो बुद्धि का ज्ञान है। हम आत्मा हैं, बाप को याद करना है इससे ही कट निकलेगी और हम सतोप्रधान बन जायेंगे। वापिस तो सबको जाना है। कोई योगबल से पावन बन जायेंगे, कोई सज़ा खाकर जायेंगे। तुम बच्चों को जंक उतारने की ही मेहनत करनी पड़ती है, इसलिए इनको योग अग्नि भी कहते हैं। अग्नि से पाप भस्म होते हैं। तुम पवित्र हो जायेंगे। काम चिता को भी अग्नि कहते हैं। काम अग्नि में

तन को जोगी सब करें,
मन को बिरला कोई.
सब सिद्धि सहजे पाइए,
जे मन जोगी होइ.
अर्थ : ⚜SmitCreation.com⚜
शरीर में भगवे वस्त्र धारण करना सरल है, पर मन को योगी बनाना बिरले ही व्यक्तियों का काम है. यदि मन योगी हो जाए तो सारी सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं.

Choice is All yours

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

29-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वेदेषु यज्ञेषु तप:सु चैव
दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम् ।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा
योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ।। 28।।

Translation

BG 8.28: जो योगी इस रहस्य को जान लेते हैं वे वेदाध्ययन, तपस्या, यज्ञों के अनुष्ठान और दान से प्राप्त होने वाले फलों से परे और अधिक लाभ प्राप्त करते हैं। ऐसे योगियों को भगवान का परमधाम प्राप्त होता है।

Commentary

हम वैदिक अनुष्ठान, तपस्या, ज्ञान संवर्धन, विभिन्न प्रकार की तपस्या करते हैं और दान देते हैं। किन्तु जब तक हम भगवान की भक्ति में तल्लीन नहीं होते तब तक हम प्रकाश के मार्ग की ओर अग्रसर नहीं हो सकते। इन सभी लौकिक कर्मों का परिणाम भौतिक फल हैं। जबकि भगवान की भक्ति के परिणाम-स्वरूप हमें सांसारिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त होती है। इसलिए रामचरितमानस में वर्णन किया गया है

नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान।

भेषज पुनि कोटिन्ह नाहिं रोग जाहिं हरिजान ।।

"चाहे तुम सदाचारी, धर्मपरायण, तपस्वी, यज्ञ करने वाले हो और अष्टांग योग, मंत्र उच्चारण तथा दान आदि पुण्य कर्मों में लीन रहते हो किन्तु भक्ति के बिना यह भवरोग समाप्त नहीं हो सकता।"

जो योगी प्रकाश के मार्ग का अनुगमन करते हैं वे मन को संसार से विरक्त कर उसे भगवान में अनुरक्त कर लेते हैं और अपना पूर्ण कल्याण करते हैं। इसलिए श्रीकृष्ण कहते हैं कि वे ऐसा फल पाते हैं जो अन्य सभी पद्धतियों से प्राप्त होने वाले फलों से परे होता है।

जलकर काले बन गये हैं। अब बाप कहते हैं गोरा बनो। यह बातें तुम ब्राह्मणों के सिवाए कोई की बुद्धि में बैठ नहीं सकती। यह बातें ही न्यारी हैं। तुमको कहते हैं यह तो शास्त्रों को भी नहीं मानते। नास्तिक बन पड़े हैं। बोलो, शास्त्र तो हम पढ़ते थे फिर बाप ने ज्ञान दिया है। ज्ञान से सद्गति होती है। भगवानुवाच, वेद-उपनिषद आदि पढ़ने, दान-पुण्य आदि करने से कोई भी मेरे को प्राप्त नहीं करते। मेरे द्वारा ही मेरे को प्राप्त कर सकते हैं। बाप ही आकर लायक बनाते हैं। आत्मा पर जंक चढ़ जाती है तब बाप को बुलाते हैं कि आकर पावन बनाओ। आत्मा जो तमोप्रधान बनी है उसे सतोप्रधान बनना है, तमोप्रधान से तमो रजो सतो फिर सतोप्रधान बनना है। अगर बीच में गड़बड़ हुई तो कट चढ़ जायेगी।

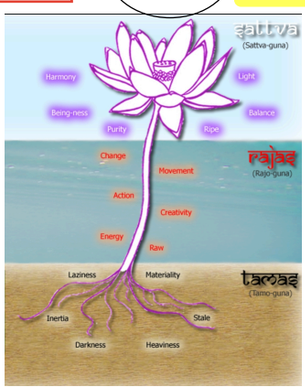

बाप हमको इतना ऊंच बनाते हैं तो वह खुशी रहनी चाहिए ना। विलायत में पढ़ने के लिए खुशी से जाते हैं ना। अभी तुम कितना समझदार बनते

हो। कलियुग में कितना तमोप्रधान बेसमझ बन पड़ते हैं। जितना प्यार करो उतना और ही सामना करते। तुम बच्चे समझते हो कि हमारी राजधानी स्थापन होती है। जो अच्छी रीति पढ़ेंगे, याद में रहेंगे वह अच्छा पद पायेंगे। सैपलिंग भारत से ही लगता है। दिन-प्रतिदिन अखबार आदि से तुम्हारा नाम बाला होता जायेगा। अखबारें तो सब तरफ जाती हैं। वही अखबार वाला कभी देखो तो अच्छा डालेगा, कभी खराब क्योंकि वह भी सुनी-सुनाई पर चलते हैं ना। जिसने जो सुनाया वह लिख देंगे। सुनी-सुनाई पर बहुत चलते हैं, उसको परमत कहा जाता है। परमत आसुरी मत हो गई। बाप की है श्रीमत। कोई ने उल्टी बात बताई तो बस आना ही छोड़ देते हैं। जो सर्विस पर रहते हैं, उन्हों को सब मालूम रहता है। यहाँ तुम जो भी सेवा करते हो, यह है तुम्हारी नम्बरवन सेवा। यहाँ तुम सेवा करते हो, वहाँ फल मिलता है। कर्तव्य तो यहाँ बाप के साथ करते हो ना। अच्छा!

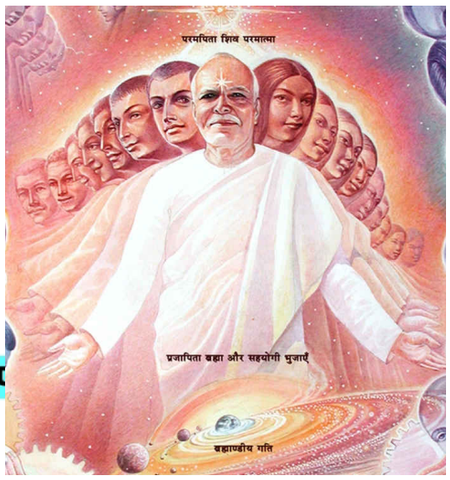

Points: ज्ञान योग धार

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

धारणा क लिए मुख्य सार:-

1) आत्मा रूपी सुई पर जंक चढ़ी है, उसे योगबल से उतार सतोप्रधान बनने की मेहनत करनी है। कभी भी सुनी-सुनाई बातों पर चलकर पढ़ाई नहीं छोड़नी है।

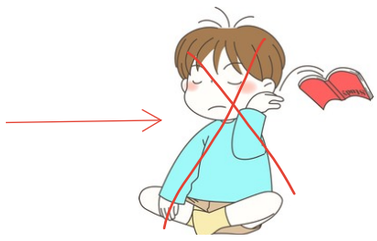

2) बुद्धि को ज्ञान की प्वाइंट्स से भरपूर रख सर्विस करनी है। रग देखकर ज्ञान देना है। बहुत शुरूड (तीक्ष्ण) बुद्धि बनना है।

वरदान:-

कलियुगी दुनिया के दु:ख अशान्ति का नज़ारा देखते हुए सदा साक्षी व बेहद के वैरागी भव

ये पक्का समझ लो..

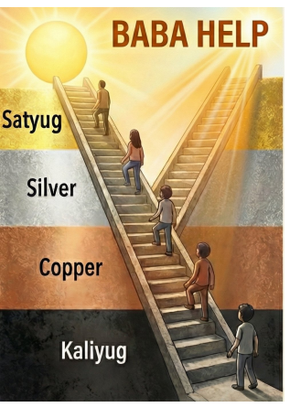

इस कलियुगी दुनिया में कुछ भी होता है लेकिन आपकी सदा चढ़ती कला है।

दुनिया के लिए हाहाकार है और आपके लिए जयजयकार है।

मिरुआ मौत मलूक का शिकार।

आप किसी भी परिस्थिति से घबराते नहीं क्योंकि आप पहले से ही तैयार हो। साक्षी होकर हर प्रकार का खेल देख रहे हो। कोई रोता है, चिल्लाता है, साक्षी होकर देखने में मजा आता है।

जो कलियुगी दुनिया के दु:ख अशान्ति का नज़ारा साक्षी होकर देखते हैं वह सहज ही बेहद के वैरागी बन जाते हैं।

Easily

स्लोगन:- कैसी भी धरनी तैयार करनी है तो वाणी के साथ वृत्ति से सेवा करो।

वृत्ति

Points: ज्ञान योग धारण

अव्यक्त इशारे-

अब सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की धुन लगाओ

जैसे कोई मशीनरी को सेट किया जाता है तो एक बार सेट करने से फिर अटोमेटीकली चलती रहती है।

इस रीति से अपनी सम्पूर्ण स्टेज वा बाप के समान स्टेज वा कर्मातीत स्थिति की स्टेज के सेट को ऐसा सेट कर दो जो फिर संकल्प, शब्द वा कर्म उसी सेटिंग के प्रमाण आटोमेटिक चलते रहें।

साल का अन्त है ना। देखो, बापदादा मैजारिटी शब्द कह रहा है, सर्व नहीं कह रहा है, मैजारिटी कह रहा है। तो दूसरी बात क्या देखी? क्योंकि कारण को निवारण करेंगे तब नव-निर्माण होगा। तो दूसरा कारण - अलबेलापन भिन्न-भिन्न रूप में देखा। कोई कोई में बहोत रॉयल रूप का भी अलबेलापन देखा। एक शब्द अलबेलेपन का कारण - सब चलता है। क्योंकि साकार में तो हर एक के हर कर्म को कोई देख नहीं सकता, साकार ब्रह्मा भी साकार में नहीं देख सके लेकिन अब अव्यक्त रूप में अगर चाहे तो किसी के भी हर कर्म को देख सकते हैं। जो गाया हुआ है कि परमात्मा की हजार आँखें हैं, लाखो आँखें हैं, लाखो कान है। वह अभी निराकार और अव्यक्त ब्रह्मा दोनों साथ-साथ देख सकते हैं। कितना भी कोई छिपाये, छिपाते भी रॉयल्टी से हैं, साधारण नहीं। तो अलबेलापन एक मोटा रूप है, एक महीन रूप है। शब्द दोनों में एक ही है, सब चलता है, देख लिया है क्या होता है! कुछ नहीं होता। अभी तो चला लो, फिर देखा जायेगा! यह अलबेलापन के संकल्प है। बापदादा चाहे तो सभी को सुना भी सकते हैं लेकिन आप लोग कहते

हो ना कि थोड़ी तो लाज-पत रख दो। तो बापदादा भी लाज-पत रख देते हैं लेकिन यह अलबेलापन पुरुषार्थ को तीव्र नहीं बना सकता। पास विद ऑनर नहीं बना सकता। जैसे स्वयं सोचते हैं ना सब चलता है। तो रिजल्ट में भी चल जायेंगे लेकिन उड़ेंगे नहीं। तो सुना क्या दो बातें देखी! परिवर्तन में किसी न किसी रूप में, हर एक में अलग-अलग रूप से अलबेलापन है। तो बापदादा उस समय मुस्कुराते हैं, बच्चे कहते हैं - देख लेंगे क्या होता है! तो बापदादा भी कहते हैं - देख लेना क्या होता है! तो आज यह क्यों सुना रहा है? क्योंकि चाहो या नहीं चाहो, जबरदस्ती भी आपको बनना तो है ही और आपको बनना तो पड़ेगा ही। तो थोड़ा सख्त सुना दिया है।

29/12/2025

(31-12-1999)

अमृतवेले प्रेरणाओं को कैच करना

Fitting Setting

10.1 ईश्वरीय मर्यादाओं की फिटिंग और सेटिंग :

आजकल बापदादा विशेष कार्यक्रम में बिज़ी रहते हैं। वह कौन-सा कार्य होगा ? कोई भी कार्य में बाप के साथ बच्चों का सम्बन्ध होगा ना ? तो अपने से सम्बन्धित कार्यक्रम को नहीं जानते हो ? अमृतवेले जब बाप से गुडमार्निंग व रूहरूहान करने आते हो, तो उस समय अनुभव नहीं करते हो या उस समय लेने में ही बिज़ी रहते हो ? क्या टच होता है ? वर्तमान समय समाप्ति का समय समीप आ रहा है, समाप्ति में लास्ट और फास्ट दोनों का प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार होता है। बापदादा हर रोज़ हरेक की सेटिंग और फिटिंग — ये दोनों ही बातें देखते हैं। कोई-कोई अपने आपको सेट करने की कोशिश भी करते हैं, लेकिन फिटिंग ठीक न होने के कारण सेटिंग भी नहीं होती। फिटिंग और सेटिंग को तो आप जानते हो ना ? ईश्वरीय मर्यादाओं में अपने आपको चलाना। यह ईश्वरीय मर्यादायें हैं फिटिंग। इन मर्यादाओं के आधार से स्थिति की सेटिंग होती है। बापदादा जब नम्बरवार महावीरों को देखते हैं व महारथियों के महारथी सेटिंग की फिटिंग करते हैं तो क्या देखते हैं ? कोई-न-कोई बात की व मर्यादा की फिटिंग न होने के कारण, सीट पर सेट नहीं हो सकते। अभी-अभी सीट पर हैं और अभी-अभी सीट के बजाय कोई-न-कोई साइट पर दिखाई पड़ते हैं। तो बापदादा इसी कार्य में बिज़ी रहते हैं। उम्मीदवार दिखायी बहुत देते हैं और लाइन भी बहुत बड़ी दिखायी देती है, लेकिन प्रमाण स्वरूप कोई-कोई होता है।